National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 30-11-2025, Accepted: 02-01-2026, Published: 20-01-2026
Volume 11, Issue 1, 2026, Page No. 33-36

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन

डॉ० संजीव कुमार तिवारी[1], शैलेंद्र कुमार पाण्डेय[2]

[1] प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र,शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय,रीवा (म०प्र०) लाइफ लॉन्ग लर्निंग विभाग, अ० प्र० सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

[2] शिक्षाशास्त्र, लाइफ लॉन्ग लर्निंग विभाग, अ० प्र० सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है। सृजनात्मकता आज के ज्ञान–आधारित एवं प्रतिस्पर्धात्मकयुग में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष मानी जाती है, क्योंकियह विद्यार्थियों में नवीन सोच, समस्या–समाधान क्षमता, मौलिकता, कल्पनाशीलता तथा नवाचार की प्रवृत्ति को विकसित करती है। विद्यालयी शिक्षा के स्तर पर सृजनात्मकता का विकास विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ–साथ उनके व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायक सिद्ध होता है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों की शैक्षिक परिस्थितियाँ, संसाधन, शिक्षण पद्धतियाँ तथा सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण भिन्न होने के कारण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में भी अन्तर की सम्भावना रहती है। इसी संदर्भ में इस शोध पत्र मेंयह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर पाया जाता है।

इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा नमूने केरूप में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयनयादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के मापन हेतु मानकीकृत सृजनात्मकता परीक्षण का उपयोग किया गया। एकत्रित आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी'–परीक्षण जैसी उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों की सहायता से किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों सेयह स्पष्ट हुआ कि शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का स्तर सामान्यतः ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाया गया। इसका प्रमुख कारण शहरी क्षेत्र में उपलब्ध शैक्षिक संसाधन, तकनीकी सुविधाएँ, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों के अवसर, शिक्षकों की विविध शिक्षण विधियाँ तथा अनुकूल बौद्धिक वातावरण माना जा सकता है। वहीं ग्रामीण विद्यार्थियों में सृजनात्मकता के विकास में संसाधनों की कमी, सीमित शैक्षिक अवसर एवं पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ बाधक सिद्ध होती हैं।अध्ययन सेयह भी निष्कर्ष प्राप्त हुआ कियदि ग्रामीण विद्यालयों में नवोन्मेषी शिक्षण विधियों, परियोजना कार्य, कला एवं अभिव्यक्तिपरक गतिविधियों, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा अनुकूल शैक्षिक वातावरण को प्रोत्साहित किया जाए तो ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में भी उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। इस प्रकारयह शोध पत्र शिक्षा नियोजकों, शिक्षकों एवं प्रशासकों के लिए उपयोगी सिद्ध होता है, क्योंकि इसके निष्कर्षों के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में सृजनात्मकता के विकास हेतु उपयुक्त शैक्षिक कार्यक्रम एवं नीतियाँ विकसित की जा सकती हैं। अंततःयह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि सृजनात्मकता का विकास केवल क्षेत्र विशेष पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उपयुक्त अवसर, संसाधन एवं शिक्षण वातावरण उपलब्ध कराकर प्रत्येक विद्यार्थी में सृजनात्मक क्षमता को उन्नत किया जा सकता है।

मूल शब्दः ग्रामीण एवं शहरी, माध्यमिक विद्यालय, सृजनात्मकता, मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात इत्यादि

वर्तमानयुग में सृजनात्मकता को शिक्षा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उद्देश्य माना जा रहा है। सृजनात्मकता वह मानसिक क्षमता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति नवीन विचारों का सृजन करता है, समस्याओं के मौलिक समाधान खोजता है तथा अपनी कल्पनाशीलता को व्यवहारिकरूप प्रदान करता है। माध्यमिक स्तर का समय विद्यार्थियों के बौद्धिक, संवेगात्मक एवं व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील एवं निर्णायक होता है। इस अवस्था में विद्यार्थियों में निहित सृजनात्मक क्षमताओं का विकास न केवल उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है, बल्कि उनके भविष्य के जीवन, व्यवसाय एवं सामाजिकयोगदान को भी दिशा प्रदान करता है। अतः माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक एवं आवश्यक है।

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में स्पष्ट भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थी प्रायः सीमित संसाधनों, पारंपरिक सामाजिक ढाँचों एवं कम शैक्षिक अवसरों के बीच शिक्षा ग्रहण करते हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को अपेक्षाकृत अधिक शैक्षिक सुविधाएँ, तकनीकी संसाधन, प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण एवं विविध अनुभव प्राप्त होते हैं।ये सभी कारक विद्यार्थियों की सोच, कल्पनाशीलता, समस्या–समाधान क्षमता तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्षरूप से प्रभावित करते हैं।ऐसे मेंयह जानना आवश्यक हो जाता है कि क्या ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई अंतर विद्यमान है, अथवा दोनों परिवेशों में सृजनात्मकता का विकास समान स्तर पर हो रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं आधुनिक शिक्षण–अधिगम अवधारणाएँ इस बात पर बल देती हैं कि शिक्षा केवल तथ्यों के स्मरण तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों में नवाचार, मौलिक चिंतन एवं सृजनात्मक दृष्टिकोण का विकास करे।यदि विद्यालयी शिक्षा में सृजनात्मकता को उचित स्थान नहीं दिया गया, तो विद्यार्थी रटन्त विद्या तक सीमित रह जाते हैं और उनकी अंतर्निहित क्षमताएँ विकसित नहीं हो पातीं। ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, सह–शैक्षिक गतिविधियाँ, शिक्षक–विद्यार्थी संबंध तथा विद्यालयी वातावरण में पाए जाने वाले अंतर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के विकास को भिन्न–भिन्न रूप में प्रभावित कर सकते हैं। इस संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन द्वारा वास्तविक स्थिति का विश्लेषण करना अत्यंत आवश्यक है।

अतः प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ अध्ययन करना है, जिससे दोनों परिवेशों के विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमताओं की वास्तविक स्थिति का पता लगाया जा सके।यह अध्ययन शिक्षकों, शिक्षाविदों, पाठ्यक्रम निर्माताओं एवं शैक्षिक प्रशासकों को सृजनात्मकता के विकास हेतु उपयुक्त शिक्षण–रणनीतियाँ एवं नीतियाँ निर्धारित करने में सहायक सिद्ध होगा। साथ ही, यह शोध विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्णयोगदान प्रदान करेगा।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है, क्योंकि सृजनात्मकता 21वीं सदी के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का एक प्रमुख आधार मानी जाती है। आज की प्रतिस्पर्धात्मक एवं नवाचार–प्रधान दुनिया में विद्यार्थियों में मौलिक चिंतन, समस्या समाधान, कल्पनाशीलता तथा नव सृजन की क्षमता का विकास अनिवार्य हो गया है। ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में उपलब्ध शैक्षिक संसाधनों, शिक्षण विधियों, सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों तथा सांस्कृतिक अनुभवों में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है, जिसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति पर पड़ता है। इस शोध के माध्यम सेयह स्पष्ट किया जा सकेगा कि दोनों परिवेशों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में किस प्रकार की समानताएँ एवं भिन्नताएँ विद्यमान हैं तथा उनके विकास में कौन–कौन से कारक सहायकया बाधक हैं। इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षकों को उपयुक्त शिक्षण–अधिगम रणनीतियाँ अपनाने, पाठ्यक्रम निर्माणकर्ताओं को सृजनात्मकता–आधारित पाठ्यक्रम विकसित करने तथा शैक्षिक प्रशासकों एवं नीति–निर्माताओं को ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के लिए संतुलित एवं समान अवसर उपलब्ध कराने में सहायक सिद्ध होंगे। इस प्रकारयह शोध न केवल विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता के संवर्धन में उपयोगी होगा, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार तथा राष्ट्र के बौद्धिक एवं नवाचारी विकास में भी महत्वपूर्णयोगदान देगा।

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध–प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन कीरूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली–भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है।

सम्बंधित साहित्य

मणिमाला (2018) द्वारा माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिसके अन्तर्गत दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के सृजनात्मकता की विमा प्रवाहशीलता, विविधता एवं मौलिकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के विषय की समस्या की प्रकृति के अनुसार वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जनपद में स्थित दिव्यांग एवं सामान्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना है। अध्ययन के उद्देश्यों के लिए प्रयागराज जनपद में स्थित दिव्यांग एवं सामान्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 50–50 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया। उपकरण के रूप में प्रोफेसर बाकर मेंहदी का शाब्दिक सृजनात्मक चिन्तन परीक्षण का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के सृजनात्मकता की विमा प्रवाहशीलता, मौलिकता एवं सृजनात्मकता में अन्तर है अर्थात् सामान्य विद्यार्थियों में प्रवाहशीलता, मौलिकता एवं सृजनात्मकता दिव्यांग विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के सृजनात्मकता की विमा विविधता एक–दूसरे के समान है।

मिश्रा, पी0के0 एवं पाण्डेय, मीनू (2018) द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया। अध्ययन में लिंग के आधार पर उद्देश्यों का निर्माण कर अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए अनुसंधानकत्री ने अध्ययन प्रक्रिया को एकस–पोस्ट–फैक्टो अनुसंधान विधि से सम्पन्न किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयागराज जनपद में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के चुनाव हेतुयादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्रयागराज मण्डल में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् 300 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण को मापने के लिए संज्योत सेठ, सुषमा चौधरी एवं उपेन्दर धर द्वारा निर्मित आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट स्केल तथा विद्यार्थियों के सृजनात्मकता का मापन के लिए डॉ0बी0के0पासी द्वारा निर्मित पासी टेस्ट ऑफ क्रियेटिविटी का प्रयोग किया गया है। जिसका उद्देश्य स्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मापन करना है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतुएनोवा (एफ– अनुपात) सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषणोपरान्त पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कुल विद्यार्थियों में छात्रों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव पाया गया जबकि छात्राओं के सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव नहीं पाया गया।

झा (2019) द्वारा परंपरागत और आधुनिक छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययनष विषय पर शोध कार्य किया। शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य गुरुकुल–संस्कृत विद्यालयों के अध्ययनकर्ताओं तथा राजकीय विद्यालयों के अध्ययनकर्ताओं की सृजनात्मकता के स्तर का आंकलन करना था । शोध कार्य हेतु 235 अध्ययनकर्ताओं का चयन नमूने के तौर पर लिया गया। वांछित डेटा का संकलन बाकर मेंहदी की सृजनात्मक चिंतन के शाब्दिक परीक्षण द्वारा किया गया। संकलित डेटा के क्रांतिक अनुपात आधारित विश्लेषण से प्राप्त हुआ कि परंपरागत तथा आधुनिक छात्राओं की सृजनात्मक क्षमता का स्तर समान है ।

मुहम्मद आलम, महमूद (2019) ने सृजनात्मकता और उपलब्धि अभिप्रेरणा के बीच सम्बन्ध का अध्ययन किया। न्यादर्श केरूप में 450 विद्यार्थियों जो कि कक्षा–10 वीं के है पर सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। इन्होंने तथ्यों के एकत्रीकरण के लिए बाकर मेंहदी के सृजनात्मक परीक्षण तथा बीना शाह द्वारा निर्मित उपलब्धि अभिप्रेरणा उपकरण का प्रयोग किया। निष्कर्ष में पाया कि

सृजनात्मकता व उपलब्धि अभिप्रेरणा में सकारात्मक सम्बन्ध होता है।

खरे, उषा (2019) ने अधिक सृजनात्मक और कम सृजनात्मक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में स्थिति का अध्ययन किया। न्यादर्श केरूप में 800 विद्यार्थियों का चयन किया जिसमें भोपाल संभाग के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र से 512 लड़के व 288 लड़कियाँ थी। उन्होंने अपने शोध में 17 प्रतिशत उच्च सृजनात्मक छात्र–छात्राओं व 17 प्रतिशत निम्न सृजनात्मक छात्र–छात्राओं का शोध हेतु चयन किया । निष्कर्ष केरूप में पाया कि व्यक्तिगत मूल्यों एवं सृजनात्मकता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

शर्मा, रेणुका (2019) Emotional intelligence and creativity of school students - उद्देश्य–अध्ययन का उद्देश्य सृजनात्मक चिन्तन और संवेगात्मक बुद्धि के स्तरों पर तीन प्रकार के विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का परीक्षण करना था। न्यादर्श केरूप में 300 छात्रायें (तीन प्रकार के विद्यालय – पब्लिक, सरकारी और गुरूकुल, प्रत्येक से 100 छात्रायें) ली गयी। उपकरण – सृजनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण टोरेन्स (1966) का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष में पाया कि

1. पब्लिक स्कूल की छात्राओं ने गुरूकुल व सरकारी विद्यार्थियों की तुलना में सार्थकरूप से उच्च प्राप्तांक प्राप्त किये।
2. सरकारी विद्यालयों एवं गुरूकुल के विद्यार्थियों के सृजनात्मक परीक्षण के निष्पादन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शोध अध्ययन के उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इस प्रकार है–

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं– प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाएं निम्नवत हैं –

परिकल्पना– ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध में विवरणात्मक अनुसन्धान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या– प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जनपद के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को जनसंख्या केरूप में चुना गया है।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने सम्भाव्य विधि के अंतर्गत आने वाले सरलयादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया है। इसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जनपद के शहरी क्षेत्र में स्थित 10 माध्यमिक विद्यालयों तथा ग्रामीण क्षेत्र में स्थित 10 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 400 विद्यार्थियों (200 छात्र तथा 200 छात्राओं) का चयन किया गया है।

शोध उपकरण– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सृजनात्मकता के परीक्षण हेतु प्रो0 बी0के0 पासी द्वारा निर्मित पासी सृजनात्मकता परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शोध से प्राप्त परिणामों का सारणीबद्ध व उनकी व्याख्या अग्रवत है–

परिकल्पना– ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1: ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का विवरण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता मान	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता (0.05 स्तर पर)
ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी	200	54.54	2.56	398	9.79	सार्थक अंतर है
शहरी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी	200	57.13	2.72			

उपर्युक्त तालिका में ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का विवरण दिया गया है। प्रथम समूह ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का है जिनका मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 54.54वं 2.56 है जबकि दूसरा समूह शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का है जिनका मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 57.13 वं 2.72 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए क्रांतिक अनुपात की गणना की गयी जिसका मान 9.79 प्राप्त हुआ जो 0. 05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से अधिक है, अतः निष्कर्षरूप से कह सकते हैं कि दोनों समूहों के मध्यमानों में अंतर सार्थक है अर्थात ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।। इस प्रकार शोधकर्ता की उपर्युक्त शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है।

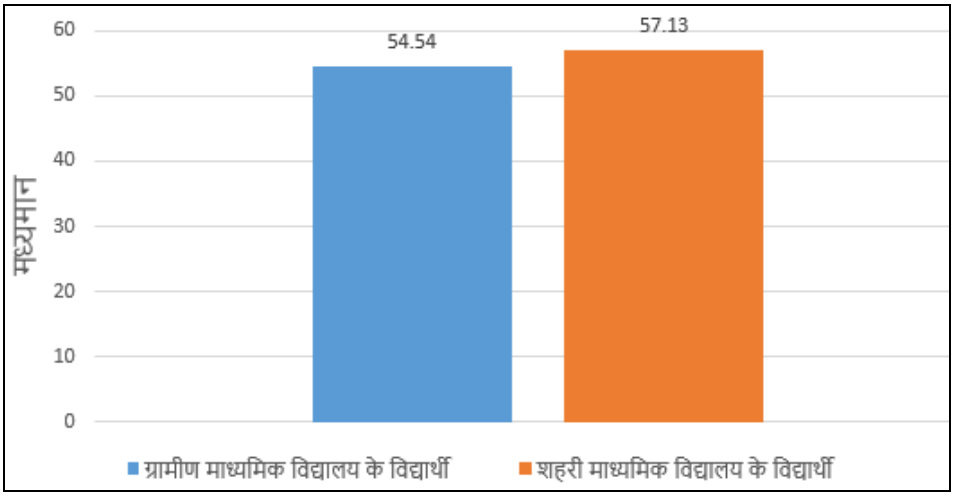

ग्राफ 1: ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का विवरण

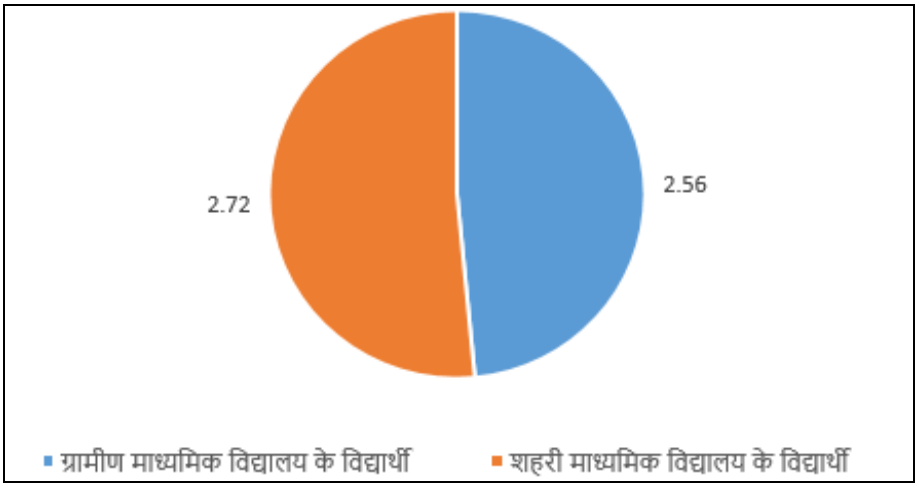

ग्राफ 2: ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का विवरण (मानक विचलन)

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में "ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है" से सम्बन्धित परिकल्पना का परीक्षण सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से किया गया। प्राप्त परिणामों के विश्लेषण सेयह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के स्तर में सांख्यिकीयरूप से सार्थक अन्तर पाया गया। अध्ययन मेंयह देखा गया कि शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का औसत सृजनात्मकता स्कोर ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक था, जोयह संकेत करता है कि शहरी परिवेश विद्यार्थियों को सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अधिक अवसर प्रदान करता है। शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध शैक्षिक संसाधन, तकनीकी सुविधाएँ, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण तथा शिक्षकों द्वारा नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के विकास में सहायक सिद्ध होता है। दूसरी ओर ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता अपेक्षाकृत कम पाई गई, जिसका कारण सीमित संसाधन, पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ तथा नवाचार के अवसरों का अभाव हो सकता है। अतः अध्ययन के निष्कर्षों के आधार परयह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत परिकल्पना स्वीकृत होती है। साथ हीयह निष्कर्ष भी निकाला जा सकता है कियदि ग्रामीण विद्यालयों में शैक्षिक सुविधाओं का विस्तार, सृजनात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहन तथा आधुनिक शिक्षण विधियों का समुचित प्रयोग किया जाए, तो ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के स्तर में भी अपेक्षित वृद्धि की जा सकती है।

शैक्षिक उपयोगिता

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन सम्बन्धीयह शोध अध्ययन शैक्षिक दृष्टि से अत्यंत उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है।यह अध्ययन विद्यालयी शिक्षा में सृजनात्मकता के स्तर, स्वरूप एवं भिन्नताओं को स्पष्ट करता है, जिससेयह समझने में सहायता मिलती है कि भौगोलिक एवं सामाजिक परिवेश विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को किस प्रकार प्रभावित करता है। इसके माध्यम सेयह ज्ञात किया जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध सीमित संसाधनों, पारंपरिक जीवन–शैली एवं सामाजिक अनुभवों का सृजनात्मकता पर क्या प्रभाव पड़ता है तथा शहरी क्षेत्रों में आधुनिक सुविधाएँ, तकनीकी साधन एवं विविध शैक्षिक अवसर विद्यार्थियों की सृजनशील सोच को किस सीमा तक प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार का तुलनात्मक अध्ययन शिक्षकों कोयह मार्गदर्शन प्रदान करता है कि वे विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि के अनुरूप शिक्षण विधियों, गतिविधियों एवं मूल्यांकन तकनीकों का चयन कर सकें।

यह शोध अध्ययन पाठ्यक्रम निर्माण एवं शैक्षिक नियोजन में भी सहायक सिद्ध होता है, क्योंकि इसके निष्कर्षों के आधार पर सृजनात्मकता को बढ़ावा देने वाले पाठ्यक्रम, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ तथा नवाचारपूर्ण शिक्षण रणनीतियाँ विकसित की जा सकती हैं। विद्यालय प्रशासकों एवं नीति–निर्माताओं के लिएयह अध्ययन उपयोगी है, क्योंकि इससे ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के बीच शैक्षिक असमानताओं को कम करने हेतु उपयुक्तयोजनाएँ एवं संसाधन आवंटन संभव हो पाता है। इसके अतिरिक्त, यह शोध शिक्षकों में सृजनात्मक शिक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है तथा विद्यार्थियों में मौलिक चिंतन, समस्या–समाधान क्षमता एवं आत्म–अभिव्यक्ति के विकास को प्रोत्साहित करता है। समग्र रूप से,यह अध्ययन माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि, समान अवसरों की उपलब्धता तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु एक सशक्त शैक्षिक आधार प्रदान करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, जे. सी. (2014): शिक्षा मनोविज्ञान,विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. मिश्रा, बी.एल. (2015): शिक्षा एवं सृजनात्मकता,लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
3. वर्मा,एस. के. (2016): आधुनिक शिक्षा में सृजनात्मक विकास,मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
4. शर्मा, आर.ए. (2016): शिक्षा में अनुसंधान विधियाँ,आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।
5. पाण्डेय, के. पी. (2017):मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
6. सिंह,अरूण कुमार (2017):मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, पटना ।
7. चतुर्वेदी,एम. (2018): विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों की सृजनात्मकता. समकालीन शैक्षिक अध्ययन, 5(3), 23–29।
8. गुप्ता,एस. पी. (2018): शैक्षिक मनोविज्ञान,विनोद पुस्तक मंदिर, नई दिल्ली।
9. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (छब्म्त्ज),(2019): माध्यमिक शिक्षा में नवाचार एवं सृजनात्मकता,छब्म्त्ज, नई दिल्ली।
10. त्रिपाठी, आर. के. (2019): माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 8(2), 45–52।
11. सिंह, डी. पी. (2020): ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मक सोच का तुलनात्मक अध्ययन. शैक्षिक विमर्श, 12(1), 67–74।